साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 32, मार्च(प्रथम), 2018

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

[.....गतांक से - अध्याय 5 - "स्वतंत्र इच्छा"]

लेखक - डॉ० रिक लिंडल
अनुवादक - डॉ० अनिल चड्डा

स्वतन्त्र इच्छा

पुरानी आत्मा ने कहना शुरू किया, "स्वतंत्र इच्छा तुम्हे तुम्हारी नियत परिस्थितियों के अंदर अपने जीवन के साथ कुछ भी करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है. ज्यादातर मामलों में तुम्हे पूर्वाभास के द्वारा पता चल जाता है कि अपनी आंतरिक प्रकृति के बारे में जानने के अवसरों को अधिकतम करने के लिये और आध्यात्मिक रूप से विकसित होने के लिये तुम्हे क्या विकल्प चुनने हैं. और साधारणतया तुम वही विकल्प चुनोगे जो सकारात्मक नतीजे की ओर ले जाते हैं. लेकिन अक्सर, तुम शशोपंज में रहते हो, और तुम यह नहीं जानते कि क्या करना है. जब तुम्हारे सामने इस तरह की दुविधा आती है, तो तुम्हे मेरी यह सलाह है कि अंतरात्मा की आवाज के अनुसार चलो और अपने विकल्प को उसके अनुसार चुनो जो तुम्हारा उच्चतम आदर्श है जिसकी तरह तुम बनना चाहते हो."

"ठीक है....मैं उसे याद रखूँगा. लेकिन उन स्थितियों के बारे में क्या करूँ जब मेरे मित्र मुझे कुछ ऐसा करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं जो मैं जानता हूँ कि गल्त है."

"वह मुश्किल स्थिति हो सकती है. बेशक, तुम्हारे पास हमेशा ही अपने उच्चतम आदर्श के अनुसार विकल्प चुनने की स्वतन्त्र इच्छा है. फिर भी, मैं जानता हूँ कि तुम इस उत्तर की तलाश में नहीं हो. तुम्हारे प्रश्न का उत्तर चरित्र की मजबूती से सम्बन्ध रखता है, और तुम उसके बारे में सीखोगे जब हम आज बाद में दूसरी मूल आस्थाओं के बारे में बात करेंगें. अब के लिये, मैं बस यही कह सकता हूँ कि जो तुम जानते हो कि यह सही चीज है, उसके विरुद्ध जाना तुम्हे इस बात की याद दिलाएगा कि तुम वह नहीं हो. यह अध्यात्मिक रूप से ज्ञानवर्धक नहीं है, क्योंकि तुम अपने बारे में कुछ नया नहीं सीखते हो. यह एक पीछे ले जाने वाला कदम है, और यह अध्यात्मिक रूप से तुम्हारे विकास को नहीं बढायेगा. जितना तुम अपनी अंतरात्मा की आवाज के विरुद्ध जाओगे और वह बनोगे 'जो तुम नहीं हो', तुम्हारा अध्यात्मिक उत्थान उतना ही धीमे होगा."

“ठीक है, मैं समझ गया. लेकिन तब क्या कहते हो जब एक व्यक्ति, जो जुर्म करने वाला है, यह तर्क देता है कि जुर्म न्यायोचित है, उसकी अंतरात्मा की आवाज के अनुसार.”

“लोग जो भी करते हैं उनके पास उसका औचित्य होता है. यह तोड़ा-मरोड़ा गया हो सकता है, तुम उससे सहमत नहीं हो सकते, लेकिन उनके लिये यह हमेशा तर्कसंगत होता है. तुम्हारे प्रश्न का कोई साधारण उत्तर नहीं है, इसके अलावा कि हम यह कहें कि जो विकल्प तुम चुनते हो उसके हमेशा परिणाम होते हैं. और कभी-कभी वह विकल्प तुम्हे पीड़ादायक अनुभव देते हैं, अपने लिये भी और दूसरों के लिये भी. यह नियत घटनाएं होती हैं जो तुमने अपने मार्ग में स्थापित की हैं, और तुम जानते हो कि जब इस तरह की स्थितियाँ आती है, तो तब तुम्हे स्वयं को योग्य साबित करना होगा.”

“स्वतंत्र इच्छा रखना एक दोधारी तलवार है. कभी-कभी यह जानना मुश्किल हो जाता है कि इसे किस ओर से चलायें. सबसे मुश्किल स्थिति तब होगी जब तुम्हारा उस स्थिति से सामना होगा जहाँ तुम जानते हो कि जो विकल्प तुम्हे चुनने पड़ रहे हैं वह तुम्हारी नैतिकता या तुम्हारे बेहतर निर्णय के विरुद्ध हैं, फिर भी यही एक विकल्प है जिससे वो नतीजा निकलेगा जो तुम चाहते हो. जब इस तरह के निर्णय का सामना करना पड़ता है, तो तुम यह पक्का विश्वास कर सकते हो कि तुम अपनी आंतरिक प्रकृति के बारे में कुछ नया सीखने जा रहे हो.”

“वह बहुत कठिन लग रहा है.”

“हाँ,ऐसा ही है. सहज ज्ञान से, तुम जानते हो कि, आध्यात्मिक रूप से विकसित होने के लिये, तुम्हे कभी-कभी सिक्के के दोनों तरफ का अनुभव लेना होगा - बुरा लगने से कैसा लगता है और अच्छा लगने से कैसा लगता है; वह करने से कैसा लगता है जो तुम जानते हो कि सही है और वह करने से कैसा लगता है जो तुम जानते हो कि गल्त है. या, दूसरे शब्दों में, कभी-कभी तुम्हे वो होना पड़ेगा ‘जो तुम नहीं हो’, गहरे स्तर पर ये पता लगाने के लिये तुम क्या हो.”

“क्या यह वही स्थिति नहीं है जो मैंने ऊपर बताई थी, जहाँ तुम जानते हो कि यह एक जुर्म है, लेकिन तुम इसे अपनी अंतरात्मा की आवाज से सही ठहराते हो.”

“नहीं. इस घटना में, कृत्य पहले से विचारित नहीं है. तुम्हारे मामले में एक उदाहरण होगा, कि जैसे, किसी को अपनी रक्षा करते हुए मारना, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम अमनपसंद हो, या किसी पर हिन्सापूर्वक हमला करना जिसने किसी ऐसे को ज़ख्मी किया हो जिससे तुम बहुत अधिक प्रेम करते हो. एक दूसरी घटना में कृत्य कानूनी तौर पर सही हो सकता है, और तुम अपने नैतिक जमीर के विरुद्ध कृत्य करने को मजबूर हो. इसका एक सामान्य उदाहरण लड़ाई के दौरान घटित होता है, जब किसी व्यक्ति को जबरन भर्ती के बाद उस स्थिति का सामना करना पड़ता है जब उसको अपने देश की सेवा करने के लिये किसी को मारना पड़ता है या किसी और अच्छी बात के लिये. जब तुम्हारे सामने इस तरह की स्थितियाँ आती है, तो तुम मजबूर महसूस करते हो, या तुम मजबूर होते हो, वह होने के लिये ‘जो तुम नहीं हो’. ऐसी स्थितियों में तुम्हारे कृत्यों के परिणाम से तुम्हारे अंदर तक हिल जाने की संभावना होती है, और तुम बर्बाद हो सकते हो. लेकिन समय के साथ, और राख से निकल

कर, तुम फिर से विकास करोगे, एक गहरी और ज्यादा निपुण आध्यात्मिक परख के साथ, जब तुम्हे पता लगेगा कि सच में तुम क्या हो."

"जीवन में ये अध्याय बहुत मुश्किल प्रतीत होते हैं."

"ऐसी परिस्थितियों में तुम्हारे विकल्पों के परिणाम हमेशा इस चीज को बदल देंगें कि तुम अपने आप को क्या समझते हो, तुम्हारी अंदर गहराई तक. यह घटनाएं तुम्हे अपने-आप का फिर से अविष्कार करने देती हैं, एक 'आंतरिक अनुभव' पा कर जो किसी और तरीके से संभव नहीं होता. अपने-आप की खोज के इसी तरह के अनुभव, या आंतरिक शिक्षा, तब घटित होते हैं जब व्यक्तिगत सम्बन्ध तबाह होते हैं, जहाँ, बाद में अवलोकन करने से तुम्हे पता चलता है कि तुम्हे बहुत पीड़ा देनी पड़ी थी, स्वयं को भी और दूसरों को भी, यह पता लगाने के लिये तुम कौन थे. यह अनुभव तुम्हारे संसार को बदल देते हैं, और तुम्हे बाद में समझ में आता है कि जो चीजें तुम्हारे लिये पहले महत्व रखती थी अब वो उनसे पूरी तरह से भिन्न हैं जो अनुभव के बाद महत्वपूर्ण हो जाती हैं; तुम अपने जीवन को एक अलग ही लेंस से देखते हो. तुम अपने आप को अलग महसूस करते हो, और तुम जानते हो कि तुम्हारे मूल्य मौलिक रूप से थोड़े बदल चुके हैं."

" तुम किस तरह के व्यक्तिगत सम्बन्धों की असफलताओं की बात कर रहे हो?"

"अनेक हैं - जो शारीरिक शोषण, यौन शोषण, मदिरा शोषण, ड्रग शोषण, सम्बन्धों में धोखे के माध्यम से होते हैं. ऐसी स्थितियाँ जिसमें आपकी स्वतंत्र इच्छा विनाशकारी परिणामों की ओर ले जाती है. यह अनुभव नियत हैं, और अपने-आप को खोजने में यह व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करे और ऐसे विकल्पों का चयन करे, जो उसे उसके उच्चतम आदर्शों के अनुसार अच्छा इन्सान बनायेंगे, ताकि वह यह पता लगा सके कि 'वह क्या नहीं है'.

रिक्की ने आह भरी. "जीवन कठोर हो सकता है."

"हाँ....और सुखद रूप से सुंदर भी. भाग्य से, ज्यादातर लोग अपने जीवनकाल में इन स्थितियों में से बदतर स्थितियों का सामना नहीं करते."

पुरानी आत्मा कहती रही, "अब जब हमने नियति और स्वतंत्र इच्छा के बारे में कुछ विस्तार से विचार कर लिया है, हम अपना ध्यान विशिष्टता की ओर मोड़ेगे. मैंने इस अवधारणा के बारे में तुमसे कल जिक्र किया था, कि वास्तविकता की रचना में यह क्या भूमिका अदा करती है. लेकिन हम आज इसे एक ज्यादा व्यक्तिगत दृष्टिकोण से देखेगे."

क्रमशः.....